सामाजिक संरचना

समाजशास्त्र में सबसे पहले हर्बर्ट स्पेंसर ने सामाजिक संरचना शब्द का प्रयोग अपनी पुस्तक "प्रिंसिपल ऑफ सोशियोलॉजी" में सन् 1885 में किया था।

जिस प्रकार हमारे शरीर की संरचना होती है जो हमारे शरीर के अंगो जैसे - हाथ, पैर, पेट, नाक, कान, आँख इत्यादि मिलकर बनती है, उसी प्रकार से सामाजिक संरचना का तात्पर्य समाज की इकाइयों की क्रमबद्धता से होता है। सामाजिक इकाइयाँ जैसे — समूह, समितियाँ, संस्थाएँ, परिवार, सामाजिक प्रतिमान आदि की क्रमबद्धता को सामाजिक संरचना कहते है। संरचना शब्द से तात्पर्य इकाइयों की क्रमबद्धता से है। इकाइयों का एक ऐसा प्रतिमानित संबंध जो अपेक्षाकृत स्थिर होता है संरचना कहलाता है।

हम हमारे चारों ओर की संरचना को भली-भाँती समझ सकते है। उदाहरणस्वरूप — एक मकान की संरचना को लेते है तो हम पाते है कि इसकी संरचना में ईंट पत्थर चूना, सीमेंट आदि है, यदि हम इनसभी को अलग-अलग कर देते है तो मकान की संरचना नष्ट हो जाएगी।

सामाजिक संरचना की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने भिन्न प्रकार से दिए है जो निम्नलिखित है:—

टालकाट पारसन्स :—

"सामाजिक संरचना परस्पर संबंधित संस्थाओं, एजेंसियों और सामाजिक प्रतिमानों तथा समूह में प्रत्येक सदस्य द्वारा ग्रहण किये गये पदों एवं कार्यों की विशेष क्रमबद्धता को कहते है"

मैकाइवर एवं पेज :—

"समूह निर्माण के विभिन्न रूप से सामाजिक संरचना के जटिल प्रतिमान की रचना कहते है। सामाजिक संरचना के विश्लेषण में सामाजिक प्राणियों की विविध मनोवृत्तियों तथा रूचियों के कार्य प्रदर्शित होते है।"

गिन्सबर्ग :—

सामाजिक संरचना का अध्ययन सामाजिक संगठन के प्रमुख स्वरूपों समूह, समितियों तथा संस्थाओं के प्रकार एवं इनकी सम्पूर्ण जटिलता जिनसे कि समाज का निर्माण होता है से संबंधित है।

Amita Kumari